NEW ARRIVAL UNDER AARAMBH's Publication

Through Their Eyes: Stories Shaped by a Child's Perception

Children's stories are windows into a world unfiltered by the rigid logic and that often come with adulthood. When a child writes a story, they are not merely arranging words—they are mapping their inner universe, where emotions, imagination, and perception blend seamlessly.

A child's perception is deeply personal and often surprising. They might see a rainy day not as gloomy, but as a stage for pond kingdoms and umbrella duels. A stray dog might become a secret guardian, following them to school to ensure their safety. The smallest details—a crack in the wall, a shadow in the corner, a cloud shaped like a dragon—can become the seeds of entire adventures.

What makes these stories remarkable is their honesty. Children write without the burden of literary rules or the fear of being misunderstood. Their characters often speak with directness, their plots leap without warning, and their endings may be abrupt or delightfully open-ended. This rawness is not a flaw—it is the essence of their storytelling.

Through their narratives, we glimpse how they interpret the world: fairness is absolute, kindness is heroic, and magic is not to questioned. Even when they write about sadness or fear, it is often wrapped in hope, as if they instinctively believe that every dark tunnel must have a light at the end.

We in AARAMBH always encouraging children to write stories based on their perceptions is more than a creative exercise—it is an act of listening. It allows adults to step into their shoes, to understand their joys, worries, and dreams. In these tales, we find not only the seeds of future writers but also the purest reflections of human imagination.

In the end, a child's story is not just a story—it is a mirror, showing us the world as it could be if we dared to see it with wonder again. This book contains 17 moral based interesting stories.

मेरी कहानी

पाठकों के लिए एक संदेश

इस पुस्तक में संकलित कहानियाँ बाल श्रम रोकथाम परियोजना से जुड़े बच्चों द्वारा रची गई हैं तथा आरम्भ संस्था की टीम के सहयोग से लिखित रूप में प्रस्तुत की गई हैं। इन कहानियों के माध्यम से बच्चों को अपने विचारों, भावनाओं, अनुभवों, सपनों और जीवन से जुड़े पहलुओं को अभिव्यक्त करने के लिए एक सुरक्षित एवं रचनात्मक मंच प्राप्त हुआ है।प्रत्येक कहानी अपने बाल लेखक की अनूठी आवाज़, कल्पनाशीलता और दृष्टिकोण को दर्शाती है। कुछ कहानियाँ बच्चों के व्यक्तिगत अनुभवों से प्रेरित हैं, जबकि अन्य उनकी कल्पना और अपने आसपास की दुनिया के प्रति उनके अवलोकनों पर आधारित हैं।सभी बच्चों की सुरक्षा, गोपनीयता और कल्याण को ध्यान में रखते हुए, उनके नाम तथा अन्य व्यक्तिगत पहचान संबंधी जानकारी को बाल संरक्षण एवं सुरक्षा मानकों के अनुरूप गोपनीय रखा गया है।हमें आशा है कि ये कहानियाँ पाठकों को प्रेरित करेंगी और उन्हें उन बच्चों के विचारों, आकांक्षाओं, संवेदनाओं तथा दृढ़ता को समझने का अवसर प्रदान करेंगी, जिनकी आवाज़ अक्सर अनसुनी रह जाती है।

सप्रेम,आरम्भ

गुस्से का परिणाम

मेरा नाम रोहिणी है। मैं पवई गांव के एक मोहल्ले में रहती हूँ। यह मेरी खुद की कहानी है, जो मैंने अपने अनुभव से सीखी है।

मैं पाँचवी कक्षा में पढ़ती थी। एक दिन मुझे स्कूल से एक साइकिल मिली। साइकिल पाकर मैं बहुत खुश थी, लेकिन मुझे साइकिल चलाना नहीं आता था। मेरी एक सहेली को साइकिल चलाना अच्छे से आता था, इसलिए मैंने उससे मदद मांगी।

वह मुझे साइकिल चलाना सिखाने लगी, लेकिन तभी साइकिल पंचर हो गई। मैंने ₹10 देकर साइकिल में फिर से हवा भरवाई, ताकि मैं सीखना जारी रख सकूँ। नुकसान कर लिया।

इसके बाद मेरी सहेली साइकिल चलाने लगी और मैं पीछे बैठ गई। हम दोनों घर की ओर जा रहे थे, तभी अचानक उसने मुझे साइकिल से नीचे गिरा दिया और खुद साइकिल लेकर भाग गई। यह देखकर मुझे बहुत गुस्सा आया। मैंने तुरंत उसका पीछा किया, उसे पकड़ लिया और गुस्से में उसे खूब डांटा और दो-एक थप्पड़ भी मार दिए।

जब यह बात मेरे पापा को पता चली, तो उन्होंने मुझे बुलाकर बहुत डांटा। लेकिन इस घटना से मेरा गुस्सा और बढ़ गया। गुस्से में आकर मैंने अपनी एक दूसरी सहेली के साथ मिलकर साइकिल को खेत में ले जाकर जला दिया। कुछ समय बाद जब मेरा गुस्सा शांत हुआ, तो मुझे अपनी गलती का एहसास हुआ। मुझे समझ आया कि गुस्से में आकर मैंने बहुत बड़ा नुकसान कर लिया।

सीख यह कहानी हमें सिखाती है कि गुस्से में लिए गए फैसले अक्सर गलत होते हैं और उनका परिणाम नुकसानदायक होता है।

ओर सभी आवश्यक प्रक्रियाओं के पश्चात रोहित का विद्यालय में प्रवेश सुनिश्चित किया गया

आज रोहित कक्षा तीसरी का छात्र है और नियमित रूप से विद्यालय जा रहा है।

प्रारंभ में उसे पढ़ना-लिखना नहीं आता था, लेकिन अब वह धीरे-धीरे किताबें पढ़ने लगा है

उसकी पढ़ाई के प्रति रुचि में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है । उसके व्यवहार, स्वच्छता एवं आत्मविश्वास में सकारात्मक परिवर्तन स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है

रोहित की यह कहानी इस बात का सशक्त उदाहरण है कि यदि सही मार्गदर्शन, निरंतर प्रयास और सामुदायिक जागरूकता का साथ मिले, तो किसी भी बच्चे का जीवन नई दिशा पा सकता है।यह केवल एक बच्चे की सफलता नहीं, बल्कि पूरे समुदाय में सकारात्मक बदलाव की शुरुआत है।

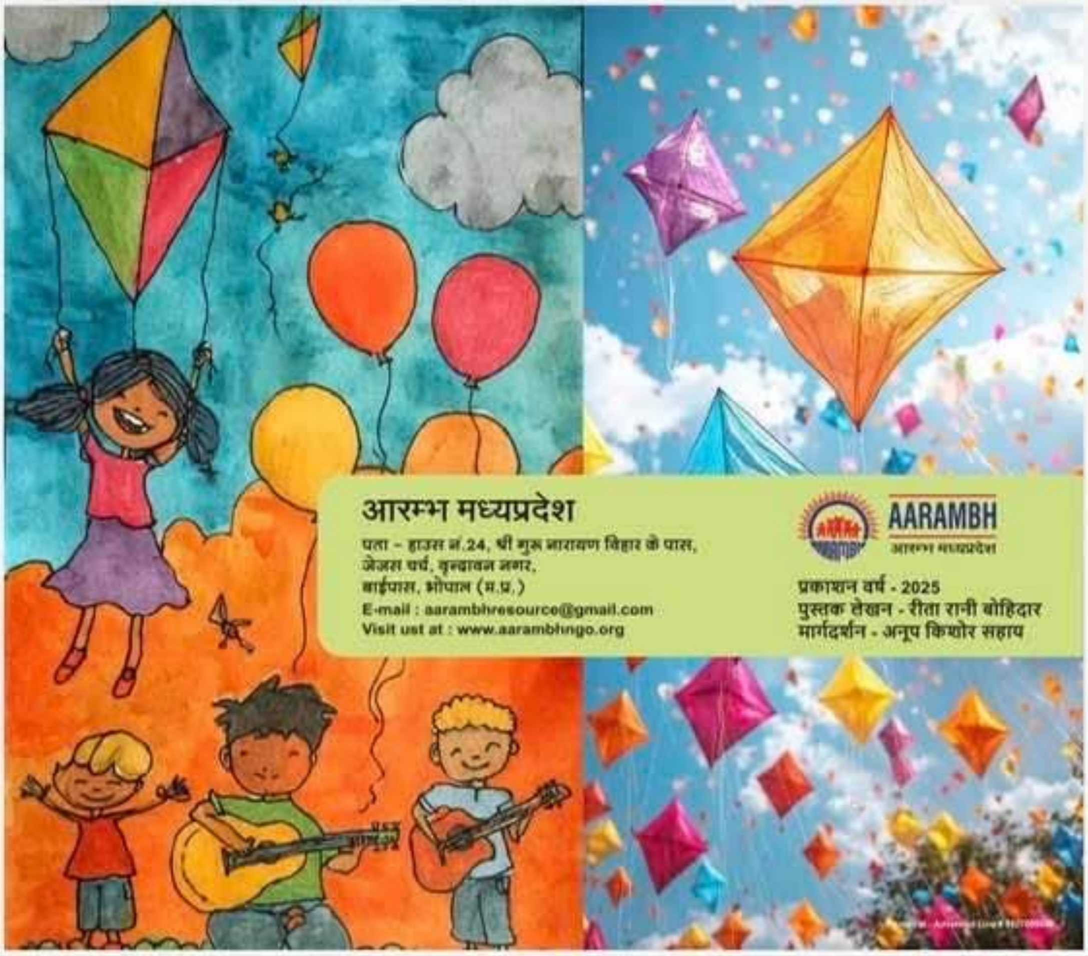

आरम्भ मध्यप्रदेश

पता - हाउस नं.24, श्री गुरू नारायण विहार के पास,
जेजस चर्च, वृन्दावन नगर,
बाईपास, भोपाल (म.प्र.)
E-mail : aarambhresource@gmail.com
Visit ust at : www.aarambhngo.org

AARAMBH
आरम्भ मध्यप्रदेश

प्रकाशन वर्ष - 2025
पुस्तक लेखन - रीता रानी बोहिदार
मार्गदर्शन - अनूप किशोर सहाय